Vol 4 Issue 11 May 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063 **Impact Factor :3.4052(UIF)**
Volume - 4 | Issue - 11 | May - 2015 Available online at www.aygrt.isrj.org

दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में विविध चेतना

दिलीप कोंडीबा कसबे
हिंदी विभाग विज्ञान महाविद्यालय, सांगोला ता. सांगोला जि.सोलापुर .

Short Profile

Dilip Kondiba Kasbe is working at Department of Hindi in Science College, Sangola. Solapur.

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः मैं ये कहूँगा कि ये दोनों कवि सामाजिक,संस्कृति, प्रकृति और सौंदर्य चेतना संदेश के विशेषज्ञ है। इन दोनों ने मानवीकरण, रहस्यात्मकता, सुख-दुःख, उदासी, अलौकिक प्रेम, प्रकृति की सौंदर्यात्मक समृध्दता, क्रांति, संघर्ष, पौरुष्यता, नारी श्रृंगार, रागात्मक तत्व, परिवेश, पक्षी, अस्पृश्यता, जातियता, धन लोलुपता, धनपिशाचता, आंदोलन, नेता, ईश्वर और प्रकृति, शांति, त्याग, तप,सहिष्णुता, उपेक्षित, स्वदेशाभिमान, दया, विनय जीवनमूल्य, सांप्रदायिकता, निषेध, मातृत्व, गुरुभक्ति, वसुधैव कुटूंबकम इस जैसे अनेक रुपों का मर्मांकन इन दोनों कवियों ने अपनी कविताओं द्वारा समस्त अध्येताओं को अर्पित कर चेतित करने का प्रयास किया है, यह सही लगता है।

दिनकर और कुसुमाग्रज का काव्य चेतनामयी और व्यापकतम है। इसमें दिनकर का जन्म सिमरिया गाँव में ३० सितम्बर, १९०८ में हुआ था और मृत्यु २४ अप्रैल, १९७४ को मद्रास के एक अस्पताल में हुयी । कुसुमाग्रज का जन्म २७ फरवरी, १९१२ को पुणे (महाराष्ट्र) में हुआ है और मृत्यु १९९९। इन हिंदी -मराठी दोनों काव्य सृजेताओं ने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि वैभिन्न परिवेशों का सुक्ष्मतम अध्ययन किया है । अर्थात इनके काव्य सृजन में सौंदर्य, प्रेम, प्रकृति, संस्कृति, सभ्यता, राष्ट्रीय भाव, मानवतावादी विचारों का अर्थपूर्ण सृजन हुआ है। यहाँ हम इन दोनों के भावमयी विभिन्न चेतनाओं में से निम्नाकित चेतनाओं का उहापोह करेंगे ।

१) दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में सौंदर्य-चेतना -

वैसे सोचेंगे तो सौंदर्यानुभूति को लेकर भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने अपने-अपने अनेक महनीय विचार व्यक्त किए है। उनमें से सामान्यतः १) सौंदर्य का बाहय पक्ष २) सौंदर्य का आन्तरिक पक्ष । वैसे देखे तो सौंदर्यानुभूति इंद्रियों की आनंदानुभूति और

विचारानुभूति प्रदान करता है, ऐसा मुझे लगता है।

चिंतामणी के प्रथम भाग में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सौंदर्य पिपासु के बारे में लिखा है – ''सौंदर्य ने विश्व में ऐसे दिव्य सौंदर्य की सृष्टि की है जिसका आभास मानव को वन, पर्वत, नदी, निर्झर, पशु-पक्षी आदि में आदिकाल से मिलता आ रहा है। इसी कारण वह कभी उषा की राग-रंजित छवि से अनुरक्त हुआ है तो कभी संध्या की नील-पीत-मिश्रित अरुणिमा में आत्मविभोर हो उठा है, कभी वह शरद के सुरभित हास में मग्न हुआ है तो कभी वसंत श्री की सुषमा में अपनी सुधबुध गवाँ बैठा है। इस तरह मानव ने नाना-प्रकार के रंग-बिरंगे-पुरुषों, चित्र-विचित्र पशु-पक्षियों आदि में भी सौंदर्य के दर्शन किये है। -- मानव – हृदय की ये भाव-लहरियाँ सौंदर्यानुभूति की जननी है, क्योंकि सौंदर्य-स्त्रष्टा की इस अद्‌भुत एवं अनुपम रचना को कौन ऐसा हृदय-हीन व्यक्ति होगा जिसके हृदय में उसके प्रति आकर्षण न हो । सौंदर्य अपनी ओर हठात आकर्षित करता है। ''[१] यहाँ यह स्पष्ट है कि सौंदर्यवादी आलोचको ने काव्य सृजन में सौंदर्य को मर्मांकित किया है। जैसे कवीन्द्र रवीन्द्र, प्लेटो, कीटस् ने सौदर्य की महनीयता को चित्रित किया है। इसमें बाहय सौंदर्य – पक्ष में नारी श्रृंगार सौंदर्य अधिक किया जाता है। आन्तरिक पक्ष में उसकी भावनाओं और उदात्त गुणों का सौदर्यांकन किया जाता है।

वैसे देखें तो दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में सौंदर्य-चेतना के साथ-साथ क्रांति, संघर्ष, पौरुष, ओज के कवि होते हुए भी वे राग-तत्व से परे नही है। याने स्पष्ट है कि दिनकर के काव्य में सौंदर्य चेतना का विकास हुआ है, जैसे -रेणुका, रसवंती, और उर्वशी में क्रमशः दिखता है। संक्षिप्त में उनके काव्य में सौंदर्यांकन विविध रुपों में चितेरित है। दिनकर ने 'रेणुका' में संग्रहीत 'कोयल' नामक कविता में स्वर्ग की अस्परा का चित्रण करते हुए 'उर्वशी' काव्य में भी सौंदर्य चेतना का दर्शन कराया है । उसकी नायिका स्वर्ग की अप्सरा है, देवलोक की एक नर्तकी है, अनंत यौवनमयी है, चिर-रहस्यमयी है। मात्र वह स्वर्ग की अकेली अप्सरा नही, उसीके समान रंभा, मेनका, सहजन्या, चित्रलेखा जैसी अनेक अप्सराएँ वहाँ रहती है। उनका सौंदर्यांकन अमर है। कवि 'उर्वशी' कविता में लिखते है – ''उर्वशी नंदनवन की उषा,''[२] ''सुरपुर की कौमुदी,''[३] ''इंद्र के मन की कलित कामना,''[४] ''रति की मूर्ती,''[५] ''रमा की प्रतिमा,''[६]'' है। इस प्रकार कवि ने अनेक जगहों उर्वशी का सौंदर्यांकन किया है। वे कहते है, उर्वशी के सौंदर्य के सामने सभी सौंदर्य आभाहीन है, मलिन है – ''दर्पण, जिसमें प्रकृति रुप अपना देखा करती है।

वह सौंदर्य कला जिसका सपना देखा करती है ।
नही, उर्वशी नारि नही, आभा है निखिल भुवन की ।
रुप नही, निष्कलुष कल्पना है स्त्रष्टा के मन की । ''[७]

कवि दिनकर ने 'रेणुका' कविता में नारी सौंदर्य का नख-शिखांत वर्णन किया है। वह बीज रुप में है। किन्तु 'रसवंती' काव्य में नारी-सौंदर्य का दृष्टिकोण निश्चित हो गया है। इसमें कवि ने नारी के बालिका से वधू की भावना में परिवर्तन, प्रेम-सुधा रस पिने की आदत पड जाना, संक्षिप्त में नारी का यह रुप ज्ञानी, कर्मी, कलाकार सभी को प्रेरणा एवं अनुभुति प्रदान पूर्ण सिध्द है। सौंदर्यांकन का कवि का यह चित्रण हिंदी साहित्य में दुर्लभ ही लगता है। डॉ. प्रतिमा जैन ने सही लिखा है – ''सौंदर्य के ऐसे सुक्ष्म, कोमल, मृदुल कल्पना संवलित, अतीन्द्रिय और हृदयग्राही चित्र हिंदी साहित्य में सामान्यतया दुर्लभ है ।''[८]

नारी जीवन के रहस्य का उद्‌घाटन करते हुए कवि ने नारी का प्रेमिका का रुप, पत्नी रुप, माता रुप, गृहिणी रुप, उच्छृखल रुप, बहना का रुप दिनकर के काव्य में शब्दचित्रित है। इसमें सौंदर्य लिप्सा में कामनामय रुप , स्वर्ग का समस्त वैभव एवं ऐश्वर्य तुच्छ लगने का और भारतीय संस्कृति में नारी का सर्वश्रेष्ठ स्थान मातृत्व का माना गया है जिसमें मैं सहमत हूँ । यहाँ स्पष्ट है नील-कुसुम, नर्तकी आदि उनकी कविताएँ भी कम महत्व की नही है। इस प्रकार मेरी राय के अनुसार दिनकर के काव्य में सौंदर्य चेतना के विभिन्न रुपों का सफलतापूर्ण शब्दांकन हुआ है।

यहाँ दिनकर की तरह कुसुमाग्रज के काव्य सृजन में भी सौंदर्य चेतना के विभिन्न रुप दृष्टिगोचर होते है। वास्तव में कुसुमाग्रज के काव्य का बाहय रुप रविकिरण-मंडल की कविता तरह है किंतु काव्य का आंतरिक रुप केशवसुत की परंपरा से जुडा हुआ दिखता है।

'जीवन लहरी' संग्रह का परिवेश स्वप्नमय, रम्यमय, अद्‌भुत, प्रेम का महत्व, प्रेम की नित्यता, प्रेम की अनिश्चितता, प्रेम की बैचेनी, कर्तव्य की कठोरता का संघर्ष कुसुमाग्रज की प्रेम कविताओं की यह विशेष विशेषता है। 'स्वप्नांची समाप्ती' कुसुमाग्रज की मशहूर कविता है। इस प्रेम कविता में सौंदर्य-चेतना, भावनाओं की उत्कटता, विचारशीलता आदी गुणों का हृदयंगम है। कुसुमाग्रज के काव्य संबंधी वि.स.खांडेकर के विचार है – ''यह अप्रतिम -सुंदर प्रेमगीत कुसुमाग्रज की कल्पत्का से लबालब भरा हुआ अमृतकलश है। यह कविता कितनी बार भी पढो तो भी रसिक मन की तृप्ति नहीं हो जायेगी और इस कविता की एक पंक्ति तो मानो किसी सुंदर मंदिर का

सुवर्ण–कलश है –– निकालो सखे, गले में से तुम्हारे चाँदणी के हाथ ।''[९] इस काव्य सौंदर्यानुभुति के साथ 'पृथ्वी चे प्रेमगीत' में भी प्रेम की दिव्यता एवं भव्यता का वर्णन है। यहाँ उषःकाल, स्वप्नों का खजाना इस जैसी अनेक कविताएँ सौंदर्य चेतना से ओतप्रोत है। क्योंकि प्रियतम की प्रेम–निष्ठा का असरपूर्ण चित्रण है। यहाँ प्रियकर उषास्वप्न को संभलकर रखने के लिए अपनी प्रियतमा से कह रहा है –

'' स्वप्नांचा वा खजिना घेऊ लगबगिने रात्र । गेली, चुकोनिया मात्र ।
उषास्वप्न हे उरले–मागे–तुझ्यासाठी रमणी । झाला उषःकाल राणी । ''[१०]

यहाँ उक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि सौंदर्य चेतना – की दृष्टि से कुसुमाग्रज की कविता अत्यंत उच्च–कोटी की बनी है। साथ ही इस कविता द्वारा प्रियकर–प्रियतमा की प्रेम–निष्ठा प्रभावि रुप से चित्रित हुई है ।

कुसुमाग्रज ने प्रेम और सौंदर्य को प्रभावी रुप से अंकित करने के लिए प्रेम – सौंदर्य को नया सामर्थ्य दिया है। नायक–नायिका के हृदय के विभिन्न भाव चेतनामयी किये है । जैसे 'गवळण' कविता में 'गवळण' के भाव चित्रित किए है। सौंदर्य–चेतना की प्रभावात्मकता 'क्षणिक' कविता में भी चित्रित की है। संक्षिप्त में कहना है तो दोनों कवियों ने नारी सौंदर्य–चेतना के विभिन्न रुप दिखाते हुए अन्य अनेक मामलोंपर सुक्ष्म–विवेचन करना जरुरी माना है।

२) दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में दार्शनिक चेतना -

भारतीय जीवन तथा धर्म में काव्य और दर्शन अन्योन्याश्रित होने के कारण जीवन के चरम लक्ष और परमतत्व की खोज काव्य और दर्शन के अनुभुति द्वारा की जाती है। याने कवि कल्पना की सहायता से भावना के द्वारा काव्य दर्शन की पूर्णता करता है। इन दोनों कवियों ने भारतीय अध्यात्म एवं संस्कृति आदि का चित्रण करना दोनों कवियों की दार्शनिक चेतना का अध्ययन प्रस्तुत करना यही हेतु है।

दिनकर के काफी काव्य में नश्वरता, निराशा, पलायन आदि भावों का चित्रण दिखता है। दिनकर का विशिष्ट दर्शन उनकी दो कृतियों 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' में ही शब्दबध्द हुआ है। उनके मनःस्थिति का स्वाभाविक असर गीता कर्मयोग को स्वीकार करने के द्वारा ही स्पष्ट होता है। जैसे –

'' नेह लगाने का जग में परिणाम यही होता है ।
एक भूल के लिए आदमी जीवन भर रोता है। ''[११]

किंतु ये भाव प्रकट होते हुए भी दिनकर 'कुरुक्षेत्र' में लिखता है –

'' यह निवृत्ति है ग्लानि, पलायन । का यह कुत्सित क्रम है ।
निःश्रेयस यह श्रमित, पराजित । विजित बुध्दि का भ्रम है। ''[१२]

यहाँ यह स्पष्ट है कि कवि दिनकर ने इन पंक्तियों में निवृत्ति मार्ग की भर्सना बताकर कर्म की प्रतिष्ठा की है। उन्हों ने निवृत्ति मार्गियों को पलायन वाद की संज्ञा देकर करारा व्यंग्य कसा है। स्पष्ट है, गीता के कर्मयोग को ही स्वीकृत किया है। वे आत्मा–परमात्मा को स्वीकृत करते है। साथ ही सम – समाज के लिए संन्यास और कर्मयोग के अंतर को व्यष्टि और समष्टि के पारस्परिकता को समझाने का महत्प्रयास करते है। सच यह भी है, कवि ने भारतीय दर्शन और संस्कृति दर्शन का भी नये ढंग–नयी शैली में ऊहापोह किया है । जैसे –

''वह बाते तो समाजवाद की शैली में करता है परंतु उसका प्रभाव अध्यात्मवाद जैसा ही पडता है ।''[१३]

कवि दिनकर बौध्द धर्म की मान्यताओं एवं विश्वासों से भी प्रभावित दिखते है । हिंदू समाज में व्याप्त त्रृटियों को जानते है और अस्पृश्य समझे जानेवाली जातियों का प्रतिनिधित्व अपनी 'बुध्ददेव' कविता में कर बुध्ददेव से पुनः अवतार लेने का आग्रह करते है। जैसे –

म' आज दीनता को प्रभु की पुजा का भी अधिकार नही ।
देव । -- धन पिशाच की विजय, धर्म की पावन ज्योति
अदृश्य हुई । दौडो बोधितत्व । भारत में मानवता अस्पृश्य हुई ।'' [१४]

कवि के मतानुसार सभी ओर गर्जन - तर्जन है, सृष्टिकर्ता के सामने मनुष्य बौना है । कवि धन पिशाच और क्रुर-हृदय नेताओं को आत्म-चिंतित करना चाहते है।

दिनकर की तरह कुसुमाग्रज के प्रथम काव्य-संग्रह 'जीवन लहरी' से लेकर अंतिम काव्य-संग्रह तक दार्शनिके चेतना का ऊहापोह दिखता है। शिवाय कवि कुसुमाग्रज ईश्वर के प्रति आकर्षित दिखाई देने के कारण पुराण कथाएँ रामायण, महाभारत आदि के कारण वे सुसंस्कारित लगते है। उनकी मुक्त काव्य - कृतियाँ दार्शनिक - चेतना से श्रेष्ठतम है।

मेरी राय के अनुसार वैसे देखे तो धर्म-अधर्म, सत्-असत, पाप-पुण्य, आस्था-अनास्था, प्रवृत्ति-निवृत्ति, भाग्यवाद-कर्मवाद, भोग-त्याग, युध्द-शांति, व्यक्ति धर्म- समाज धर्म आदि का द्वंद्व दोनों कवियों ने शब्दांकित किया ही है। जैसे चाहे 'विशाखा' काव्य संग्रह की 'देवाच्या दारी' हो, 'मराठी माती' हो, या 'कारण' कविता हो, 'घरमालक, माळाचे मनोगत, हिमरेषा, क्रांतीचा जयजयकार, छंदोमयी में संग्रहीत 'देणं' कविता में कवि कहता है -

'' मातीपण । मिटता मिटत नाही । आकाश पण । हटता हटत नाही ।
आकाश मातीच्या । या संघर्षात । माझं जखमांच देणं । फिटता फिटत नाही ।''[१५]

इससे स्पष्ट है कि, कवि ने भारतीय मानव समाज संस्कृति, धर्म और परंपरा का दर्शन, अध्यात्म दर्शन, राष्ट्रदर्शन बडा महनीय रुप से चित्रित किया है। यहाँ निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि, दोनों कवि भारतीय संस्कृति, धर्म, शाश्वतता, सार्वभौमिकता जैसे विचारों के विचारक है । इसलिए वे धरती के धनी है, लोक कवि है।

३) दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में मानवतावादी चेतना -

मानवतावादी चेतना का दर्शन भारतीयों के लिए नया नहीं है। मानवता वाद में हितकारी भावना सर्वज्ञात है। इसमें आचार्य इसमें आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने मानववाद और मानवतावादी चेतना में कुछ अंतर माना है। वे कहते है - ''मानवतावादी लेखक वह है जिन्होंने मनुष्य की संपूर्ण कृतियों का निस्संग चित्रण किया है। मानवतावादी अधिक भावुक और आदर्श-प्रेमी होते है। ''[१६] संक्षिप्त में मानववादी मानव के सत्य और स्वत्व को मानने का और मानवतावादी मानव की इच्छा - आकांक्षाओं का अध्ययन करने का अंतर माना है, जो सही लगता है। जिस मानवता का अर्थ है - आत्म-विस्तार, उदारता एवं आत्म-सम्मान की भावना । मात्र मानव ईश्वर और प्रकृति के साथ संघर्ष करते रहने के कारण मानवता समाप्त की-सी होती जाकर दानव वृत्ती बढती जा रही है, ऐसा लग रहा है। संक्षिप्त में द्विवेदीयुगीन कवियों का मानवतावाद आदर्श की सिमाओं में था किंतु छायावादी कवियों का मानवतावाद केवल सहानुभूति तक ही सिमित रहा ।

दिनकर ने मानवीय - मूल्यों का लेखा-जोखा काव्य में करते समय अहम् का त्याग ही मानवता माना है। उन्होंने त्याग,तप,उदासी, सहिष्णुता को मानव - शरीर बल ही काम देता है ऐसा कहा है। दिनकर ने इसका उहापोह कुरुक्षेत्र, हे मेरे स्वदेश, रेणुका की बोधिसत्व, रश्मिरथी में मर्मांकित किया है। जैसे - 'रश्मिरथी' में दलित, उपेक्षित तिरस्कृत के प्रतिनिधि के रुप में अपनी व्यथा कथा प्रकट की है। जैसे - ''मैं उनका आदर्श, किंतु जो तनिक न घबरायेंगे ।

निज चरित्र - बल से समाज में पद विशिष्ट पायेंगे । ''[१७]

इस प्रकार कवि दिनकर ने मानवतावादी दृष्टिकोण पनपित करते हुए मानवता ही मनुष्य के मन का परिष्कार, सन्मार्ग संयोजित कर सकता है ऐसा कहा है, जो यथोचित लगता है।

कवि दिनकर की तरह कुसुमाग्रज का काव्य भी मानवतावादी चेतना का दर्शन करता है। इस कवि के अनुसार दया, प्रेम, विनय

आदि गुणों से युक्त मानवता को स्थापित करने के लिए एक अमानवीय तत्वो को हल करने के लिए क्रांति आवश्यक है। यहाँ अ.ना. देशपांडे के अनुसार –

''सामाजिक तथा आर्थिक असामनता को समाप्त करने के लिए आंसू ढालने से ही काम नही चलेगा अथवा भगवान के द्वार जाने से काम नही चलेगा, अपितु उसके लिए क्रांति की घोषणा करनी होगी । ' गरजो रे क्रांति की जय जय यह उनकी अमर रचना है । '' [१८] यहाँ मेरी राय के अनुसार कुसुमाग्रज मानवतावादी चेतनाकार है इसलिए क्रांतिवादी कवी है । उन्होंने गुलाम बळी, लिलाव, बंदी, जालियानवाला बाग, सहानुभूति, ध्रुवपद, जाणीव, प्रेमयोग, मूल्य, चार्वक, स्वगत इन कविताओं में इन लोगों के प्रति अपनी सहानुभूति अर्पित करते है इस कवि को केवल मानवीय गुण प्रिय है । यहाँ स्पष्ट है की कवि मानवतावादी चेतना के कारण दलितों के प्रति प्रेम, अछूतोध्दार, सांप्रदायिकता के विषमतावादी विषय को नष्ट करने की भावना, नारी–चित्रण कर अनेकों की अवहेलना मानवतावादी चेतना से युक्त सुदृढ करते है।

इसमें बाबा आमटे, आण्णा हजारे, मेधा पाटकर, प्रकाश आमटे आदि के समान मानवतावादी चेतनामयी स्वभाव कवि का है, जैसे –

''मी नाही अनेकातील एकमेव । तर आहे केवळ अनेकातील एक ।
सर्वातील, सर्वांचा आणि सर्वांसाठी ।'' [१९]

यहाँ संक्षिप्त में कहना है तो इस व्यापक – जगत के अंतर्गत दोनों कवियों ने राष्ट्रीय चेतना, सौंदर्य चेतना, संस्कृति और दार्शनिक चेतना, मानवतावादी चेतना का प्रभावी शब्दांकन किया है साथ ही जाति भेद का निषेध, त्याग भावना, मातृत्व गुरु भक्ती, ईश्वर में आस्था, अछूतोध्दार, प्रकृति प्रेम एवं वसुधैव कुटूंबकम की भावना दोनों के काव्य में अंकित है।

४) दिनकर और कुसुमाग्रज के काव्य में प्राकृतिक चेतना -

मानवीय जीवन में प्रकृति को विशेष ऐसा स्थान है। मनुष्य का जीवन प्रकृति की कोख में ही पलता है। क्योंकि प्रकृति मानव के सुख–दुःख की अभिन्न संगिनी है। मनुष्य का उसके साथ रागात्मक संबंध सदैव रहा है। वैदिक काल से लेकर आज तक भारतवर्ष प्राकृतिक – सौंदर्य – संपन्न देश है। जैसे संस्कृत में वाल्मिकी, कालिदास, अश्वघोष, बाणभट्ट का प्रकृति चित्रण उच्च कोटी का है। प्रकृति चेतना को अनेक रुपों में चित्रित किया है । जैसे – आलंबन, उद्दीपन, अलंकारिक, उपदेशात्मक, रहस्यात्मक एवं मानवीकरण के रुप में विभाजित किया है। यहाँ गुरुदेव नारायण के अनुसार – ''वस्तुतः आलंबन और उद्दीपनगत प्रकृति चित्रण में ही उसकी व्यापकता के दर्शन होते है। ––– मानवीकरण को भी आलंबनगत प्रकृति चित्रण का ही रुप समझना चाहिए ।'' [२०]

यहाँ दिनकर के काव्य में प्रकृति के कई रुप देखने मिलते है। कवि ने ग्राम्य जीवन के प्रकृति–प्रेम पर अपनी प्रारंभिक कृति 'रेणुका' को चित्रित किया है। जैसे उनकी 'कविता की पुकार' में नगर के कृत्रिम सौंदर्य से भागकर खंडहरों में सौंदार्यानुभूति को ढूँढती है। 'रश्मिरथी' के द्वितीय सर्ग में परशुराम के आश्रम का मनोहारी वर्णन किया है। 'नील कुसुम' में संग्रहीत 'पावस–गीत' में कवि ने पावस के घनों का सजीवांकन किया है। 'उर्वशी' में प्रकृति का उद्दीपन रुप अपने काव्य में अपने उत्कर्ष रुप में श्रृंगार की संयोग और वियोग अवस्था में शब्दचित्रित है। 'रसवंती' की 'बालिका से वधु' प्राकृतिक वस्तुओं को उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के रुपों में प्रायोगित करते है। 'कुरुक्षेत्र' सप्तम स्वर्ग में युधिष्ठिर के रुप में द्वंद्व से मुक्त होकर शांति की कामना का चित्रण है। 'उर्वशी' में चित्रलेखा तथा निपुणिका द्वारा उर्वशी का सौंदर्यवर्णन किया है। उसमें उत्प्रेक्षा एवं अतिशयोक्ति बडी कौशलतापूर्ण है। इसमें 'रेणुका' की 'मिथिला में शरत' तथा 'विश्व–छवि', रसवंती की अमरु–धूम, रस की मुरली, रहस्य आदि में कवि ने प्रकृति के रहस्यात्मक रुपों का अंकन हुआ है। 'कलिंग – विजय' में युध्द – भूमि का विकृत वर्णन है। 'रश्मिरथी' में भविष्य में होनेवाले विक्राल युध्द का रुप प्रस्तुत है।

दिनकर ने अमानव में मानव – गुणों के आरोप करने की प्रवृत्ति को मानवीकरण संबोधा है। 'उर्वशी' में इसका प्रभावी चित्रण है। जैसे – ''सारी देह समेट निबिड आलिंगन में भरने को ।

गगन खोलकर बाँह बिसुध वसुधा पर झुका हुआ है ।'' [२१]

दिनकर की तरह कुसुमाग्रज में भी प्रकृति में परिवेश का भाव-सौंदर्य अत्यंत यथार्थ एवं प्रभावपूर्ण रुप से किया है। इसमें नियामक प्रकृति और सौंदर्य से युक्त प्रकृति का - जिसमें आलंबन, उद्दीपण, अलंकरण आदि विविध रुप चितेरीत है।

कुसुमाग्रज के काव्य में सृष्टी-सौंदर्य का चित्रण करते समय 'नदी किनारी, साफल्य, तो उद्दीपन रुप में - किनारा, मायदेशाचा वारा, मेघांची सेना, प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से - मराठी माती, पालखी, पहाट पक्षी, वारा, साँज, धीर जैसी कविताओं में प्राकृतिक चेतना के प्रति अलौकिक प्रेम का चित्रण वास्तव लगता है। कवि अलंकरण में सफल हुए है । जैसे - 'मध्यान्ह' इस कविता में अलंकरण का मर्मस्पर्शी हुआ है । जैसे –

''पहात आहेत सारीजण भांबावून । काळया पिवळया अफाट माळावर ।
हातपाय पसरुन पडलेला । आक्राळ विक्राळ । उघडा नागडा उन्हाळा ।''[२२]

'विराट वड'यह कविता मानवीकरण की दृष्टि से प्राकृतिक रुप में ओतप्रोत है । कवि ने इस कविता में दुःखी वृध्द की जिदंगी चित्रित की है। 'उत्तररात्री' इस कविता में सृष्टि में छायी शांति का संदेश सृजित किया है । कवि अंततः अपनी 'निळा पक्षी'में उदासी को प्रकट करते हुए कहता है -

''उदासपणे नेत्र शोधती जे कोठेही नसे ।
गलित पाकळयातुनी जुळावे पुन्हा पुष्प ते कसे ?
निळया अनंता मिळून गेला माझा पक्षी निळा ।
रखारखती भवताली आता माध्यन्हीच्या झला ।''[२३]

यहाँ यह भी वास्तव है कि कुसुमाग्रज की वादळ वेल, छंदोमयी, मुक्तायन जैसे अन्य कई काव्य संग्रहों में प्राकृतिक सौंदर्य की समृध्दता का अभाव भी दिखाई देता है। इस प्रकार दिनकर और कुसुमाग्रज ने प्राकृतिक चेतना को अपनी कविताओं में सृजित किया है। अपनी कलाकार प्रवृत्ति को खरेतौर पर चितारा है। संक्षेप में दोनों कवियों ने प्रकृति के आलंबन, उद्दीपन, अलंकरण, मानवीकरण एवं रहस्यात्मक रुपों में चित्रण किया है। निष्कर्षतः यह वास्तव है कि, प्रकृति चित्रण की दृष्टि से भी दोनों कवि सफल रहे है।

संदर्भ सूची : -

१) आचार्य रामचंद्र शुक्ल - चिंतामणि, प्रथम भाग,प्र.सं.पृ. २२५ ।
२) दिनकर - उर्वशी, पृ. ८ ।
३) वही
४) वही
५) वही
६) वही
७) वही, पृ. १७ ।
८) डॉ. प्रतिमा जैन - दिनकर काव्य कला और दर्शन, प्र.सं.पृ. १०४ ।
९) कुसुमाग्रज - विशाखा, पृ. ५७ ।
१०) वही, पृ. ७१ ।
११) दिनकर -कुरुक्षेत्र, पृ. ९१ ।
१२) वही, पृ. ९५ ।
१३) डॉ. प्रतिमा जैन - दिनकर काव्य कला और दर्शन, पृ. ४६२ ।
१४) दिनकर - रश्मिरथी, पृ. ४१ ।
१५) कुसुमाग्रज - छंदोमयी, पृ. १ ।

१६) आलोचना – त्रैमासिक, २० अक्तूबर, १९५६, संपादकीय, पृ. ५ ।
१७) दिनकर – रश्मिरथी, पृ. ५३ ।
१८) अ.ना. देशपांडे – आधुनिक मराठी वाड्.मयाचा इतिहास (भाग दूसरा) पृ. ३९४
१९) कुसुमाग्रज – स्वगत, पृ. ५१ ।
२०) गुरुदेव नारायण – बिहारी : एक नव्यबोध, प्र.सं.पृ.६८ ।
२१) दिनकर – उर्वशी, पृ. १ ।
२२) कुसुमाग्रज – स्वगत पृ. ५२ ।
२३) कुसुमाग्रज – किनारा, पृ. ३९ ।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org